# वसंत भाग 2

## ‘अपूर्व अनुभव’

(मॉड्यूल 1/1)

पाठ्यसामग्री

# तोत्तो–चान एवं यासुकी–चान

# संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पाठ ‘अपूर्व अनुभव’ हमारी पाठ्यपुस्तक वसंत भाग–2 से लिया गया है जिसके लेखक ‘तेत्सुको कुरियानागी’ एवं अनुवादक ‘पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा’ हैं।

‘अपूर्व अनुभव’ यह पाठ मूलतः जापानी भाषा में लिखित एवं हिंदी साहित्य की संस्मरण विधा से सम्बद्ध है। यह पाठ लेखिका के वास्तविक जीवन से संबंधित तथा उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित है। यह पाठ शिक्षा के सृजनात्मक पक्ष को व्यक्त करता है, और विभिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुये एक नवीन सोच और उमंग के साथ कार्य में प्रगति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। यहाँ दो बच्चों के माध्यम से शिक्षा के साथ–साथ मानवता के गुणों को भी उजागर किया गया है जो हमें एकता और समता की सीख देने में प्रेरणादायक सिद्ध होता है।

# पाठ का सारांश

यह कथा मूलतः जापानी भाषा में लिखा गया एक संस्मरण है इसमें तोमोए में पढ़ने वाले दो बच्चों के विषय में बताया गया है। यहाँ हर एक बच्चा एक–एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। वह उनकी निजी संपत्ति होती थी। वहाँ किसी और को आना हो तो बड़ी शिष्टता से पूछना होता था, क्या मैं अन्दर आ जाऊँ? तोत्तो–चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोंबुत्सु जाने वाली सड़क के पास था। उस बड़े से पेड़ पर चढने पर पैर फिसलने लगते थे लेकिन ठीक से चढ़ा जाए तो जमीन से छह फुट की ऊँचाई पर स्थित द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। वह झूले जैसी आरामदेह जगह थी। तोत्तो–चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद उस पर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह दूर आकाश में या सड़क पर आ–जा रहे लोगों को देखती।

तोत्तो–चान ने सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद बड़े साहस का एक काम करने का फैसला लिया। उसने यासुकी–चान को अपने पेड़ पर आने का न्योता दिया। उसे पोलियो था। वह किसी पेड़ को अपना नहीं मानता था क्योंकि पेड़ पर चढ़ना उसके लिए असंभव था। तोत्तो–चान और यासुकी–चान के इस कार्यक्रम का पता दोनों में से किसी के माता–पिता को न था। यदि उन्हें पता होता तो दोनों को डाँट पड़ती। तोत्तो–चान ने घर से निकलते समय माँ से झूठ कहा कि वह यासुकी–चान के घर जा रही है। यही कारण था कि उसने माँ की नजरों में नहीं देखा। वह अपने जूते के फीते पर निगाहें गड़ाए रही। रॉकी उसे छोड़ने स्टेशन तक आया तो आखिरकार उसने उसे बता ही दिया कि वह क्या करने जा रही है। स्कूल पहुँचने पर मैदान में उसे यासुकी–चान मिला दोनों बहुत ही अधिक उत्तेजित थे। एक दूसरे से मिलकर भी हँस पड़े। तोत्तो–चान उसे अपने पेड़ के पास ले गई। वहाँ वह चौकीदार के यहां से एक सीढ़ी उठाकर लाई। उसे तने के सहारे लगाकर द्विशाखा तक पहुँचाया।

स्वयं कुर्सी के सहारे ऊपर चढ़कर उसने सीढ़ी पकड़ ली और यासुकी–चान को ऊपर चढ़ने के लिए कहा। लेकिन यासुकी–चान के हाथ पैर इतने कमजोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। तोत्तो–चान नीचे उतर आई और उसे पीछे से धकियाने लगी। लेकिन वह स्वयं इतनी छोटी थी कि क्या करती। दोनों निराश हो गए। अचानक तोत्तो–चान को एक बात सूझी। वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और वहाँ से तिपाई सीढ़ी घसीट लाई। पसीने से लथपथ उसने तिपाई सीढ़ी को शाखा से लगा दिया और यासुकी–चान को सहारा देकर धीरे–धीरे सीढ़ी पर चढ़ाया। दोनों जान न पाए कि यासुकी–चान को ऊपर चढ़ने में कितना समय लगा। यासुकी–चान सीढ़ी के ऊपर तो पहुँच गया और तोत्तो–चान सीढ़ी से छलांग मारकर पेड़ पर पहुँच गई लेकिन यासुकी–चान को वहां से पेड़ पर लाना बहुत मुश्किल हो गया। दोनों को अपनी सारी मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो–चान का रोने का मन होने लगा लेकिन वह रोई नहीं।

उसने यासुकी–चान को लेट जाने को कहा और उसका पोलियो वाला हाथ पकड़कर उसे द्विशाखा पर खींचने की कोशिश करने लगी। उस समय अगर कोई बड़ा उन दोनों को देखता तो जरूर चीख पड़ता। दोनों बहुत खतरा उठा रहे थे। काफी मेहनत के बाद दोनों आमने–सामने द्विशाखा पर थे। पसीने से लथपथ तोत्तो–चान ने सम्मान से यासुकी–चान का अपने पेड़ पर स्वागत किया। यासुकी–चान ने झिझकते हुए मुस्कुराकर पूछा क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ? उस दिन यासुकी–चान को एक नई दुनिया की झलक दिखाई दी। वहां बैठे–बैठे दोनों ने देर तक इधर–उधर की बातें करते रहे। यासुकी–चान ने उस दिन पहली बार तोत्तो–चान को टेलीविजन के बारे में बताया जिसके बारे में उन दिनों कोई नहीं जानता था। यासुकी–चान को उसकी अमेरिका में रहने वाली बहन ने उसके बारे में बताया था। यासुकी–चान और तोत्तो–चान पेड़ पर बैठे बेहद खुश थे। यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और आखिरी अवसर था।

# धन्यवाद